ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा: नो मर्ता आभि द्रुहन्। ऋग्वेद-1/5/10
मनुष्य परस्पर द्वेष न करे।
Humans shuld not hate each other.

वर्ष 39, अंक 3 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 23 नवम्बर, 2015 से रविवार 29 नवम्बर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन –2015 सिडनी (आस्ट्रेलिया): 27–28–29 नवम्बर 2015

सार्वदेशिक सभा के नेतृत्व में भारत से पहुंचे लगभग 150 आर्यजन

हवाई अड्डे पर आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा भारत से पहुंचे आर्यजनों का भव्य स्वागत

दिल्ली हवाई अड्डे पर आर्यजनों की विदाई एवं सिडनी पहुंचने पर भारतीय प्रतिनिधि मंडल का भव्य स्वागत।

सिडनी आस्ट्रेलिया में 27 से 29 नवम्बर 2015 को हो रहे ''अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन'' में सैकड़ों की संख्या में फीजी, न्यूजीलैंड, मेल्बर्न, ब्रिसबेन, भारत, मॉरीशस, सिंगापुर, अमेरिका, कनाडा, लन्दन आदि से आर्यजन पहुंच रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, मंत्री श्री प्रकाश आर्य के नेतृत्व में लगभग 150 आर्यजनों का दल सिडनी पहुंचा। आस्ट्रेलिया आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सभी अतिथियों का जोरदार स्वागत किया दल दिल्ली से व अन्य देशों से भारी संख्या में आर्यजन सिडनी पहुंचे। सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य ने बताया कि आस्ट्रेलिया में आर्यों का ऐसा वृहद संगम पहली बार देखने को मिलेगा। इस सम्मेलन में आस्ट्रेलिया एवं दक्षिण प्रशांत क्षेत्र में वैदिक धर्म के विस्तार की योजनाओं के संकल्प को पारित किया जाएगा।

आखिर क्यों खाली हुआ कश्मीर!

मुस्लिम समुदाय की हमेशा से एक नीति रही है कि वो पहले दूसरे समुदायों में जो उपेक्षित हैं, प्रताड़ित हैं, जिस पर जातिगत रूप से टिप्पणी या धार्मिक स्थलों से जिसका तिरस्कार किया जाता है उसे उसकी उपेक्षा का आभास करा अपने साथ करता है, और फिर धार्मिक रूप से, सामाजिक रूप से संपन्न समुदाय पर हथियारों के बल पर हमला करता है, तब उसे अहसास होता है कि वो उपेक्षित लोग छोटी जाति के नहीं बल्कि हमारी धर्म संस्कृति की नींव थी ठीक यही हाल कश्मीर में हुआ।

अ भी कुछ दिन पहले एक महानुभाव ने पूछा आप लोग कश्मीर पर इतना क्यों लिखते हैं, तब हमने कहा था जो घाव ज्यादा गहरा हो वो ही सबसे ज्यादा दर्द करता हैं, कारण सैनिक दृष्टि से प्रत्येक बार कश्मीर पर सफलता पाने के बावजूद भी हम राजनैतिक दृष्टि से हर बार हारते रहे और खारे खून के आंसू आँखों से रिसते रहे लेकिन जब हम सच के गहरे तल में जाकर देखते हैं कि 1947 में जिस राज्य का राजा हिन्दू हुआ करता था आज वहां हिन्दू प्रजा भी नजर नहीं आती क्योंकि शेष भारत की तरह इस क्षेत्र में भी हिन्दू समाज विभिन्न जातियों और उपजातियों में बंटा हुआ था जनसँख्या की दृष्टि से उसमें ब्राह्मण, राजपूत और हरिजन प्रमुख थे। वैश्य तथा अन्य जातियां भी थोड़ी-बहुत संख्या में थी। ब्राह्मणों और राजपूतों में एक प्रकार की वैमनस्य की भावना भी थी इसी का फायदा उठाते हुए शेख अब्दुल्ला ने कश्मीर के उन हिस्सों में जो हिन्दू जनसँख्या बाहुल थे उसमें मुस्लिमों को बसने का आदेश दिया नतीजा बहु-प्रथा के कारण उनकी आबादी बढ़ती चली गयी दूसरी ओर किश्तवाड और भद्रवाह की स्थानीय हिन्दू जनसँख्या ऊंच-नीच के जातिगत कारणों से धर्मपरिवर्तन कर कम होती चली गई। फलस्वरूप जिला ऊधमपुर जो समग्र रूप से हिन्दू-बाहुल था इसका पीरपंचाल के साथ लगने वाला यह उत्तरी भाग मुस्लिम बाहुल हो गया। शेख अब्दुल्ला की नीति कामयाब हो गयी थी सबसे पहले उसने इन मुस्लिम-बाहुल क्षेत्रों को जम्मू से काटने की योजना बनाते हुए जिलों के पुनर्गठन के नाम पर मुस्लिम जिले बना दिए जिनका प्रशासनिक केंद्र मुस्लिम इलाकों में बना दिया था।

मुस्लिम समुदाय की हमेशा से एक नीति रही है कि वो पहले दूसरे समुदायों में जो उपेक्षित हैं, प्रताड़ित हैं, जिस पर जातिगत रूप से टिप्पणी या धार्मिक स्थलों से जिसका तिरस्कार किया जाता है उसे उसकी उपेक्षा का आभास करा अपने साथ करता है, और फिर धार्मिक रूप से, सामाजिक रूप से संपन्न समुदाय पर हथियारों के बल पर हमला करता है, तब उसे अहसास होता है कि वो उपेक्षित लोग छोटी जाति के नहीं बल्कि हमारी धर्म संस्कृति की नींव थी ठीक यही हाल कश्मीर में हुआ पहले उपेक्षित समुदाय खुद में मिलाया फिर कश्मीरी पंडितों पर हमला किया पंडित नेहरु खुद को कश्मीर का ठेकेदार समझते रहे जिस कारण वे कश्मीर के मसले पर शेख अब्दुल्ला के अतिरिक्त किसी की बात सुनने को तैयार नहीं थे और शेख अब्दुल्ला की दृष्टि मुस्लिमों के हित और चिंतन तक सीमित थी वरना उस समय भारत की सैनिक शक्ति पाकिस्तान से तीन गुना ज्यादा थी और पाकिस्तान की आंतरिक और आर्थिक स्थति भी भारत की अपेक्षा अधिक अस्त-व्यस्त थी इसलिए यदि उस समय भारत ने लाहौर पर हमला किया होता तो पाकिस्तान को गिलगित समेत जम्मू-कश्मीर के पश्चिमी और उत्तरी क्षेत्रों से पीछे हटने को विवश किया जा सकता था इस प्रकार कश्मीर की पूरी रियासत हिंदुस्तान के कब्जे में होती।

उस समय भारतीय शासकों को दो बातें ध्यान में रखने योग्य थीं एक तो भारत-पाकिस्तान का बंटवारा जनसँख्या के आधार पर नही, बल्कि धर्म के आधार पर हुआ था और धर्म किसी राजपरिवार की बपौती नहीं थी और फैसले धर्म को आधार रखकर लेने थे वो जनमानस के अंतर्मन की पुकार होती हैं अत: भारत सरकार को कश्मीर के हिन्दुओं के हित के कदम उठाने थे जबकि ऐसा नहीं हुआ और पाकिस्तान की ओर से आये कबीलाई लुटेरों ने राजनेताओं की अयोग्यता के कारण कश्मीर की संस्कृति और धर्म का मर्दन करते चले गये जो आजतक नहीं रुका।

दूसरा संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत का

...शेष पेज 6 पर

लाशों की कीमत वोट से
विशेष संपादकीय–पढ़ें पृष्ठ 2 पर

स्वाध्याय

परमेश्वर का मन्यु

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुदायेव सिन्धवः।।
ऋ0 8।6।4।; साम0 पू0 2।1।4।3; अथर्व0 20।107।1
ऋषिः- काण्वो वत्सः।। देवता इन्द्रः ।। छन्दः- गायत्री।।

विनय- इन्द्र परमेश्वर जहाँ हमारे पिता हैं, उत्पादक और पालक हैं, वहाँ वे हमारे कल्याण के लिए रुद्र भी हैं, संहारकर्त्ता भी हैं। जब जगत् में किसी स्थान पर संहार की आवश्यकता आ जाती है तो प्रभु अपने मन्यु को प्रकट करते हैं, मानों अपना तीसरा नेत्र खोल देते हैं, अपने तीसरे रूप को प्रकाशित करते हैं, उस कल्याणकारी शिव के मन्यु का तेज जब देदीप्यमान होने लगता है तो नाश होने योग्य सब संसार पतंगे की भाँति आ-आकर उसमें भस्म होने लगता है; मन्यु का पात्र कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता, सब बहे चले आते हैं। देखो, समय-समय पर बड़े-बड़े संग्राम, दुष्काल या महामारी आदि रूपों में प्रभु का वह महाबलवाला मन्यु जगत् में प्रकट होता रहता है। सब मनुष्य अपने विनाशकी ओर खिंचे चले जा रहे होते हैं, पर उन्हें यह मालूम नहीं होता। जैसे सब नदियाँ समुद्र की ओर बही चली जा रही हैं व उसमें जाकर समाप्त हो जाएँगी, लीन हो जाएँगी, उसी प्रकार प्रभु का मन्यु काल-समुद्र बनकर उन सब प्राणियों को अपनी ओर खींचता जा रहा है, जिनका कि समय आ गया है। मनुष्यों के किये हुए पाप उन्हें विनाश की ओर वेग से खींचे ले-जा रहे हैं। जिन्होंने इस संसार को तनिक भी तह के अन्दर घुसकर देखा है, वे देखते हैं कि किस-किस विचित्र ढंग से मनुष्य अपने मृतयुस्थल की ओर खिंचे चले जा रहे हैं। धन्य होते हैं अर्जुन-जैसे दिव्य दृष्टिपात पुरुष जिन्हें काल का यह आकर्षण दिखाई दे जाता है और जो देखते हैं कि 'यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति। तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।।'' हम लोग तो मौत के मुँह में घुसे जा रहे होते हैं, परन्तु कुछ पता नहीं होता। हममें से अपनी शक्तियों का बड़ा गर्व करनेवाले बड़े-बड़े प्रख्यात लोग जिस समय संसार को जितने अभिमान के साथ अपना पराक्रम दिखा रहे होते हैं, उसी समय वे उतने ही वेग से मृत्यु की ओर दौड़े जा रहे होते हैं; परन्तु उन्हें कुछ पता नहीं होता। जब उनका सब ठाठ एक क्षण में गिर पड़ता है, सामने मौत खड़ी दीखती है, तब जाकर प्रभु का रुद्ररूप उन्हें दीख पड़ता है। प्यारो! तब तुम अभी से क्यों नहीं देखते कि उसके मन्यु के सामने सब संसार झुका पड़ा है- पापी होकर कोई भी मनुष्य उसके सम्मुख खड़ा नहीं रह सकता- जिससे तुम अभी से उसके मन्यु का पात्र न बनने की समझ पा सको।

शब्दार्थ- अस्य- इस परमेश्वर की, मन्यवे - मन्यु, 'क्रोध', दीप्ति के सामने, विश्वा विशः - सब प्रजाएँ, कृष्टयः- सब मनुष्य, सं नमन्त - ऐसे झुक जाते हैं, समुद्राय इव सिन्धवः - जैसे कि नदियाँ समुद्र में समा जाने के लिए उधर स्वयं बही जाती हैं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

लाशों की कीमत वोट से

सेना के एक और कर्नल घाटी में शहीद हो गये। अपने पीछे छोड़ गये अपने परिवार की नम आँखे और देश के नेताओं की छाती पर गोद गये एक प्रश्न कि क्या इनके लिए तो पहले वोट बाद में देश है?

'किसी गजरे की खुशबू को महकता छोड़ के आया हूँ,
मैं अपनी नन्ही सी चिड़िया को चहकता छोड़ के आया हूँ !
मुझे अपनी छाती से तू लगा लेना ऐ मेरी भारत माँ,
मैं अपनी माँ की बाहों को तरसता छोड़ के आया हूँ !!

यह पंक्ति तब से गूंज रही थीं. जो एक बार कर्नल महादिक ने बोली थीं, इन पंक्तियों की वह 'नन्ही सी चहकती चिड़िया (कर्नल सन्तोष यशवंत महादिक की बेटी) जब अपने पिता की शाहदत पर रोते हुए, पर गर्व के साथ उन्हें आख़िरी सलामी दे रही थी , इस सलामी के आगे तोपों की सलामी बेकार थी . इस बच्ची की सलामी देखकर तो छाती फटने को हो रही थी. बस कुछ कहा नहीं जा रहा था, शब्द धुआं से उठ रहे थे लेकिन किसी भी लौ से चमक नहीं पा रहे थे, क्योंकि इस बच्ची की जलती लौ के आगे सब बेकार था, जो अपने देशभक्त-बहादुर-बलिदानी पिता को इस तरह से विदा कर रही थी पर हमारे मन में प्रश्न उठ रहे थे कि क्या भारत के सभी जीते-हारे सांसद इस प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं? जो कर्नल महादिक की जलती चिता की अग्नि भी पूछ रही होगी कि मुझमें और इखलाक में अंतर क्या है? इखलाक पर तुम इतना रोए कि पूरा विश्व तुम्हारे आंसू पोछने चल दिया! मैं ये नहीं पूछता क्यों रोए बस ये बता दो अब मेरी चिता पर तुम्हारे आंसू क्यों नहीं आये? क्या देश के लिए प्राण देना गुनाह है? कहां गये वो पुरस्कार लौटाने वाले साहित्यकार? क्या उन्होंने मुझे कलम से श्रद्धांजलि देना भी उचित नहीं समझा?

दादरी तो राहुल गांधी जी भी गये, ओवेशी जी भी गये, संगीत सोम, केजरीवाल, वृंदा करात जी सब गये थे। संतोष महादिक के घर क्या हुआ उसका परिवार तो चेक नहीं मांग रहा था, न फ्लैट मांग रहा था। क्या यह लोग श्रद्धा के दो सुमन भी अर्पित नहीं कर सकते थे? आज वो कलाकार कहाँ गये, जो इखलाक की मृत्यु पर ट्वीट पर ट्वीट कर रहे थे; ना वो मीडिया दिखाई दी जो गौ के मांस पर एक महीना बहस कराती है, शायद आज किसी एंकर की पलकों के कोरें भी नहीं भीगीं आज कहाँ गये वो लोग जो कतार में राष्ट्रपति जी को ज्ञापन सौंपने गये थे? खैर रक्षा मंत्री मनोहर पारिकर जी का आभार कि कम से कम उन्हें तो इस देशभक्त की याद रही।

लोग ऐसा मानते हैं इन नेताओं के अंदर आत्मा नहीं होती, न संवेदना होती है और न ही इन्हें किसी के मरने के दु:ख का अहसास होता है, इन्हें तो चिंता होती है बस अपने वोट बैंक की, इन्हें चिंता होती है जातिगत आंकड़ों की। ना इन्हें मुस्लिमों से कुछ वास्ता है, ना इनका हिन्दुओं से मतलब, इन्हें तो मतलब है सत्ता की कुर्सी से। इन्हें तो सिर्फ सत्ता की कुर्सी ही चाहिए। चाहे वो जैसे भी मिले, बिहार में नितीश सरकार में मंत्री रहे भीम सिंह जो अब भाजपा में हैं, उन्होंने 2013 में कहा था सेना के जवान तो मरने के लिए होते हैं। इतना शर्मनाक बयान देने के बाद ऐसे लोग आज भी मंचों पर जाते हैं और देश हित की बात करते दिखाई दे जाते हैं। चलो इन लोगों की बातों में गरीब अनपढ़ लोगों का बहकना कोई बड़ी बात नहीं लेकिन विडंबना यह है कि जब देश का पढ़ा लिखा वर्ग भी इनके सुर में सुर मिलाकर बोलता दिखाई देता है। बहरहाल इन लोगों का क्या कहें जिनकी आत्मा ही मर चुकी हो। पर मेरा शत-शत नमन है ऐसी महान आत्मा को जिसने कश्मीर की वादियों में तीन दिन से चल रही मुठभेड़ के दौरान आतंकियों से वीरतापूर्ण संघर्ष के समय अपनी बटालियन (41 राष्ट्रीय राइफल्स) के दो और जवानों के साथ अपने प्राणों की आहुति दी है . ऐसे सपूत कहाँ और कितने पैदा होते हैं या आज के माहौल में कब पैदा हो रहे है, इसलिए इनके जाने का अत्यंत दु:ख है, वयं तुभ्यं बलिहृत: स्याम। - अथर्वेद १२.१.६२ हम सब मातृभूमि के लिए बलिदान देने वाले हों।

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण

प्रश्न 1: 'शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण' नामक ग्रन्थ किस विषय पर लिख गया है?

उत्तर: यह ग्रन्थ सहजानन्द द्वारा प्रतिपादित स्वामी नारायण मत का खण्डन करने के लिए लिखा गया है। इस ग्रन्थ का दूसरा नाम ' स्वामी नारायणमत खण्डन' भी है।

प्रश्न 2: स्वामी सहजानन्द कौन थे?

उत्तर: इस मत के अनुयायी लोग सहजानन्द को नारायण का अवतार मानते थे।

प्रश्न 3: नारायण से अभिप्राय क्या है?

उत्तर: गोलोक और बैकुण्ठ में रहने वाले चतुर्भुज, द्विभुज और लक्ष्मीपति ईश्वर को वे नारायण मानते हैं।

प्रश्न: 4 खण्डन किसको आधार मान कर किया गया है ?

उत्तर: सहजानन्द द्वारा रचित शिक्षापत्री के अंशों को लेकर ही स्वामीजी ने असत्य और वेद के विरुद्ध बातों का खण्डन किया है।

प्रश्न:5 यह पुस्तक मूलत: कौन-सी भाषा में है?

उत्तर: मूलत: संस्कृत भाषा में है, उसका गुजराती अनुवाद स्वामी जी ने किया। उसी गुजराती से हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया गया है।

प्रश्न:6 इस ग्रन्थ का रचना काल क्या है ?

उत्तर: ग्रन्थ की रचना का समाप्ति काल संवत् 1931, पौष मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी (13 जनवरी, सन् 1875, रविवार का दिन है।

प्रश्न: 7 इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण कब और कहां से प्रकाशित हुआ था?

उत्तर: इसका गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण संवत् 1933 के आरंभ में 'ओरियण्टल प्रेस' बम्बई से प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न: 8 पुस्तक का गुजराती अनुवाद किसने किया था?

उत्तर: इसका गुजराती अनुवाद महर्षि के प्रमुख्य शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया था।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

मनुर्भव

सच्चा इन्सान बनने की ललक एक गीत में दुहराई गई है-'न हिन्दू बनूंगा न मुसलमान बनूंगा। इन्सान की औलाद हूं इन्सान बनूंगा।' यह 'इन्सान' बने रहना ही संस्कारों का प्रतिफल है जो प्राप्त होता है मां से।

ऋग्वेद की ऋचा कहती है-

ओ३म् तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मत: पथो रक्ष धिया कृतान्।

अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।। ऋ. 10/53/6

इस सारगर्भित एवं पवित्र मंत्र में परमात्मा अपनी सन्तानों-आत्माओं-को एक ही सन्देश देते हैं-मनुष्य बनो।

'इन्सान बनो कर लो भलाई का कोई काम, इन्सान बनो' और उसके लिए उपाय भी बता दिये। प्रथम उपाय है 'तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि' अर्थात् कर्म के ताने-बाने बुनते हुए मुंह सदा परमात्मा रूपी सूर्य के सम्मुख रखो। अर्थात् उसकी आज्ञा का नि:स्वार्थ भाव से पालन करो। कबीर जुलाहा थे। इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना के ताने-बाने से वह शरीर रूपी चादर बुनते थे और उन्होंने क्या किया-'दास कबीर जतन ते ओढी, ज्यों की त्यों धर दीनी चदरिया।' बेदाग, निष्कलंक।

दूसरा उपाय है 'ज्योतिष्मत: पथो रक्ष' अर्थात् संसार में आगे बढ़ने के लिए ऋषियों, मुनियों द्वारा बुद्धिमत्ता से जो ज्योतिर्मय मार्ग बनाए गये हैं उन मार्गों पर चलो और उनकी रक्षा करो। एक समय ऐसा भी था जब 'लुप्त हुए सद्ग्रन्थ'-जब भारत के जन-मानस ने वेद-विहित मार्गों का अनुसरण छोड़ दिया ता वे अन्ध-विश्वासों की घास में विलीन हो गए। जिन्हें मानवता के उत्थान के लिए महर्षि दयानन्द सरीखे तपस्वियों ने पुन: खोज निकाला।

तीसरा उपाय है 'धिया कृतान्' अर्थात् अपनी सद्बुद्धि से प्रेरित हो तुम ऐसे काम करो कि जिससे तुम्हारी कीर्ति बढ़े और अन्त में चौथा उपाय बताते हुए वेद-भगवान् कहते हैं 'अनुल्वणं वयत जोगुवामपो' अर्थात् दूसरों को शिक्षा देने से पूर्व तुम स्वयं एक आदर्श स्थापित करो ताकि आगे चलकर समाज तुम्हारा अनुगमन कर सके। तभी हम सच्चे अर्थों में मनुष्य बन पाएंगे और परमात्मा की आदर्श सन्तान भी।

सच्चा इन्सान बनने की ललक एक गीत में दुहराई गई है-'न हिन्दू बनूंगा न मुसलमान बनूंगा। इन्सान की औलाद हूं इन्सान बनूंगा।' यह 'इन्सान' बने रहना ही संस्कारों का प्रतिफल है जो प्राप्त होता है मां से। मां की चर्चा होते ही गृहस्थाश्रम का बोध होने लगता है और वहीं से आरम्भ होता है परिवार।

वेद की उक्ति है- 'जीवेम् शरद: शतम्' (यजु: 36/24) अर्थात् हे मानव। तुम सौ वर्ष पर्यन्त पूर्ण रूपेण सुख पूर्वक जियो और इस दीर्घ अवधि को बड़े वैज्ञानिक ढंग से समान रूप से चार आश्रमों में बांटा गया है - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य में विद्या और ऊर्जा ग्रहण करो, गृहस्थ में परिवार की वृद्धि, वानप्रस्थ में धर्मानुसार मार्ग दर्शन और संन्यस्त होने पर आशीर्वाद का हाथ उठता है:-

न सा सभा यत्र सन्ति न वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।

नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति, न तत् सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्।।-महाभारत

और यह गृहाश्रम ही तो परिवार को संस्कार प्रदान करने का केन्द्र बिन्दु है और चारों में श्रेष्ठ भी। मनुस्मृति के अनुसार :

यथा नदीनदा: सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्।

तथैवाश्रमिण: सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्।।

अर्थात् जैसे सब बड़े-बड़े नद और नदी सागर में जाकर स्थिर होते हैं, वैसे ही सब आश्रमी गृहस्थी ही को प्राप्त होकर स्थित होते हैं।

अब जब गृहस्थ अर्थात् परिवार की संरचना का इतना अधिक महत्व वेद और स्मृति में बखान किया गया है तो उस परिवार में मां का स्थान सर्पोपरि माना गया है। 'माता निर्माता भवति' - मां निर्माण करती है क्या केवल सन्तानका? नहीं संस्कारित सन्तान का। निर्माण यात्रा में कितने अवरोध, कितने कष्ट उसे झेलने पड़ते हैं। वह चुपचाप झेल लेती है, सह लेती है। वह स्रोत है सर्जन और समर्पण का, अपूर्व सुख का। उस सुख की तुलना में संसार भर की सम्पदाएं, सुविधाएं नगण्य हैं। पुत्र का पालन करते हुए वह वंश-परम्परा को ही आगे नहीं बढ़ाती, सम्पूर्ण संस्कृति की सेवा करती है। एक विचारक के अनुसार यदि तारे आकाश की कविता है तो नारी धरती की। वह सृजन की चेतना है। संस्कार निर्माण उसका महानतम दायित्व है। सफल मां वही होती है जो सन्तान को संस्कारी बनाती है, चरित्रवान बनाती है। चरित्र सम्पन्न व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र को गरिमा प्रदान करते हैं क्योंकि चरित्र जीवन में शासन करने वाला तत्व है और प्रतिभा से भी ऊपर। 'Character is the governing element of life and is above genius' और चरित्रवान बनने के लिए अनुशासन, विनम्रता, ईमानदारी और परोपकार की महती आवश्यकता है। असाधारण होती हैं वे माताएं जो बच्चों का ठीक समय पर सही मार्ग दर्शन करती हैं।

महान माता ही महान आत्मा का आह्वान कर सकती है। कहा जाता है कि बालक मां के पेट में ही सीखने लगता है। नेपोलियन, अभिमन्यु, वीर शिवाजी सरीखे कतिपय उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। मां की जैसे वृत्तियां, भावनाएं और सुझाव हों, वैसा ही शिशु का निर्माण होता है।

उत्तम सन्तान संस्कारों से ही बनती है। सम्भवत: इसी कारण महर्षि दयानन्द ने 'संस्कार विधि' के रूप में एक अद्भुत कृति की रचना की जिसमें मावन के सम्पूर्ण जीवन के सोलह संस्कारों की विशद व्याख्या है-

गर्भाद्या मृत्युपर्य्यन्ता: संस्कारा: षोडशैव हि।

ज्ञातव्य

...शेष पेज 7 पर

संस्कृतम्

शठे शाठ्यं समाचरेत्

यो जन: परस्यापकारं हानिं वा करोति, शिष्टाचारस्य सदाचारस्य च नियमान् न पालयति, दुर्वृत्त: कुकर्मसु प्रवृत्तश्च भवति, स 'शठ' इत्युच्यते। एतादृशा: पुरुषा: समाजस्य हानि कुर्वन्ति, देशस्योन्नतिमार्गे बाधामुपस्थापयन्ति, जाते: समाजस्य राष्ट्रस्य चावनते: कारणं भवन्ति, अत एतादृशानां पुरुषाणां नियन्त्रणं दण्डनं ताडनादिकं चावश्यकमस्ति।

मनुना मनुस्मृतौ ये महापातकिन: सन्ति, तेषां गणना आततायिषु कृता वर्तते। तेषां वधे न कोऽपि दोषो भवति। आततायिनश्च षड्विधा भवन्ति-गृहादिदाहक:, विषप्रद:, वधकर्ता, धनहर्ता, क्षेत्रहर्ता, स्त्रीहर्ता च।

आततायिनमायान्तं, हन्यादेवाविचारयन्।।1।।

अग्निदो गरदश्चैव, शस्त्रोन्मत्तो धनापह:।

क्षेत्रदारहरश्चैतान्, षड् विद्यादताताियन:।।2।।

लोके सदा दृश्यत एतद् ये जना अतीव साधव: सरला भवन्ति, तेषोमादरो न भवति। दुष्टास्तेषां धनादिकमपि हरन्ति, कार्यबाधां च कुर्वन्ति। अत एवोच्यते-'मृदुर्हि परिभूयते'। राजनीतौ च विशेषत: शठेषु शठताया: प्रयोग: करणीय:। अन्यथा कार्यसिद्धिर्न भविष्यति। उक्तं च नैषधीयचरिते-'आर्जवं हि कुटिलेषु न नीति:।' महाकविभारविनाऽपि किरातार्जुनीये एतस्यैव प्रतिपादनं कृतमस्ति।

व्रजन्ति ते मूढधिय: पराभवं, भवन्ति मायाविषु ये न मायिन:।

प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृताङ्गन् निशिता इवेषव:।।3।।

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां, भवन्ति वश्या: स्वयमेव देहिन:।

अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना, न जातहार्देन न विद्विषादर:।।4।।

इमां नीतिमेव स्वीकृत्य राम: पापिनो रावणस्य वधमकरोत्, पाण्डवाश्च दुर्योधनादीनां कौरवाणाम्। एषा नीति: शठेष्वेव प्रयोज्या, न तु सज्जनेषु। ये सज्जना: सन्ति, तै: सह सद्भावपूर्वकमेव व्यवहर्तव्यम्। उक्तं च महाभारतेऽपि-

यस्मिन् यथा वर्तते तो मनुष्यस्तस्मिन् तथा वर्तितव्यं स धर्म:।

मायाचारो मायया वर्तितव्य:, साध्वाचार:, साधुना प्रत्युयेय:।।5।।

अन्य चापि सूक्तिरस्ति-

पय:पानं भुजंगानां, केवलं विषवर्धनम्।।6।।

अतो मनुष्यै: स्वकल्याणाय शठेषु शठतापूर्ण एव व्यवहार: कार्य: सज्जनेषु च सज्जनतापूर्ण:। एषैव नीतिविदां संमतिरस्ति। उक्तं च कालिदासेन-

शाम्येत् प्रत्यपकारेण, नोपकारेण दुर्जन:।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्ष योग संस्थान सैक्टर 76, फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्ष योग संस्थान सैक्टर 76 फरीदाबाद का वार्षिकोत्सव योग शिविर एवं सामवेदपारायण यज्ञ के रूप में दिनांक 1 से 8 नवम्बर के मध्य आयोजित हुआ। यज्ञ स्वामी देवव्रत सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने अपने भाषण में कहा 'यह आश्रम क्षेत्र की जनता के लिए प्रकाश स्तम्भ बनकर आगे आये इसके लिए मैं अपनी शुभकामनाएं देता हूं। समारोह में आचार्य विजय पाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं श्री विनय आर्य महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आचार्य ओम प्रकाश योगाचार्य, आचार्य ऋषि पाल जी एवं सभा के भजनोपदेशकों की गरिमामयी उपस्थिति रही। शिविर के समापन समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कहा कि 'आज युवक एवं बच्चे अपनी प्राचीन संस्कृति से अपरिचित होते जा रहे हैं। आर्य समाज का ये दायित्व बनता है कि महर्षि दयानन्दजी के कार्यक्रम का प्रचार-प्रसार करें। स्वामी विजय वेश जी की अध्यक्षता में आकर्षक व्यायाम प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें लाठी, आसन, जिमनास्टिक और धनुर्विद्या के कौशल गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ के ब्रह्मचारियों एवं आर्य वीरों द्वारा दिखाए गये जिन्हें बच्चों, युवाओं एवं उपस्थित जन समूह ने बड़े उत्साह के साथ देखा। कार्यक्रम का समापन ऋषिलंगर के साथ हुआ।

-ओम प्रकाश शास्त्री, कार्यालय मंत्री

आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट वार्षिक महोत्सव

आर्य समाज मन्दिर, फरीदकोट(पंजाब) दिनांक 4 से 6 दिसम्बर 2015 के मध्य अपना वार्षिकोत्सव का आयोजित कर रहा है। जिसमें आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

निवेदक - सतीश कुमार शर्मा,
मो. 09855354056

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, का 32वां वार्षिकोत्सव

दिनांक : 11 से 14 फरवरी 2016 को

आर्य समाज बाहरी रिंग रोड, विकासपुरी, नई दिल्ली का 32वां वार्षिकोत्सव 11 से 14 फरवरी 2016 के मध्य सम्पन्न होगा। जिसमें मुख्य वक्ता आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी (वैदिक विद्वान) होंगे। **निवेदक :**

वेद प्रकाश, प्रधान, यशपाल सलूजा, मंत्री

मानव सेवा प्रतिष्ठान द्वारा महात्मा वेदपाल आर्य जी का सम्मान

आर्य जगत के जाने-माने त्यागी, तपस्वी, महर्षि दयानन्द सरस्वती और वैदिक परम्पराओं के परमभक्त कर्मठ कार्यकर्ता महात्मा वेदपाल जी आर्य का एक भव्य समारोह में मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली द्वारा उनकी उत्कृष्ट सेवाओं हेतु दिनांक 25 नवम्बर 2015 को सम्मान जिसमें नकद राशि एवं अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

-आचार्य सत्यप्रकाश

बंगाल में आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज कलकत्ता, हावड़ा भवानीपुर(स्त्री समाज), आसनसोल के आर्य पुरुषों ने ऋषि दयानन्द के अनन्य अनुयायी, वैदिक मिशनरी विद्वान पं. ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति की याद में विशाल पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन धूमधाम के साथ 19 विधान सरणी में हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन विधायिका श्रीमती स्मितावकसी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। शिविर का समापन रंगारंग कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। शिविर के सफलआयोजन के लिए पं. ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति की सुपुत्री विदुषी पं. अर्चना शास्त्री, श्री दीपक आर्य एवं श्री सुरेश अग्रवाल का विशेष सहयोग रहा।

-पं. वेद प्रकाश शास्त्री,
संयोजक

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समारोह सम्पन्न

वैदिक विद्वानों को सम्मानित करने हेतु इलाहाबाद संग्रहालय में आयोजित 26वें पुरस्कार समारोह का उद्घाटन डॉ. राम प्रकाश कुलाधिपति गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ. अधिराज राजेन्द्र मिश्र पूर्व कुलपति सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय, वाराणसी, डॉ. ज्वलंग कुमार शास्त्री, रणवीर रणंजय स्नाकोत्तर महाविद्यालय अमेठी एवं डॉ. राजेश पुरोहित इलाहाबाद संग्रहालय ने दीप प्रज्ज्वलित करके समारोह का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथि डॉ. अधिराज राजेन्द्र मिश्र ने डॉ. राम प्रकाश जी को उनकी महत्वपूर्ण कृति गुरु विरजा नन्द दण्डी पर पुरस्कार राशि एवं स्मृति चिन्ह तथा अंगवस्त्रम् से अलंकृत किया। डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने अपने अध्यक्षीय भाषण में पं. गंगा प्रसाद उपाध्याय द्वारा हिन्दी, अंग्रेजी संस्कृत एवं उर्दू भाषा में लिखे गये महत्वपूर्ण ग्रंथों की विस्तार से चर्चा की और कहा कि उनके दिवंगत हो जाने पर उनकी स्मृति पर संस्थापित गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति वैदिक धर्म के उन्नयन की दिशा में विद्वानों को सम्मानित करने का बहुत अच्छा कार्य कर रही है।

-प्रतिनिधि

शून्य से शिखर तक स्वामी श्रद्धानन्द पुस्तक का विमोचन

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया जी द्वारा हिन्दी में लिखित एवं श्री हरबंसलाल कोहली द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तक ''शून्य से शिखर तक स्वामी श्रद्धानन्द'' नामक पुस्तक का विमोचन श्री आनन्द कुमार चौहान डायरेक्टर एमिटी शिक्षण संस्थान तथा ए.के.सी ग्रुप ऑफ कम्पनी के कर कमलों द्वारा आर्य समाज रामकृष्णपुरम सैक्टर-9, नई दिल्ली में दिनांक 1 नवम्बर 2015 को एक समारोह के अन्तर्गत हुआ। समारोह का शुभारम्भ सामूहिक यज्ञ एवं ओ३म् ध्वज श्रीमती संजना चौधरी (प्रभारी दुर्गावाहिनी) ने फहराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती मृदुला चौहान (आर्य नेत्री धर्मपत्नी श्री आनन्द चौहान) द्वारा की गयी।

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के बच्चों ने ओ३म् पर आधारित भजन प्रस्तुत किये तथा श्रीमती ऊषा चांदा ने अपने मधुर संगीत से समा बांध दी। तत्पश्चात् श्री सुभाष आर्य (महापौर दक्षिणी दिल्ली नगर निगम), स्वामी श्रद्धानन्द(पलवलवाले), डॉ. महेश विद्यालंकार, प्रो. सुन्दर लाल कथूरिया, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, डॉ. अनिल आर्य, श्री अनिल शर्मा (पूर्व विधायक) इत्यादि ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को जीवनी पर अपने-अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर श्री रामनाथ सहगल जी के अतिरिक्त 16 अन्य महानुभावों को शाल तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के चित्र द्वारा सम्मानित किया गया।

-हरबंस लाल कोहली

संस्कारित युवा ही देश का भविष्य- विनय आर्य

देश की रक्षा तभी होगी जब हम उन्हें अपनी संस्कृति तथा देशभक्ति के पावन चरित्र से शिक्षित करेंगे। ये सद्विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने शहीद स्मृति चेतना समिति आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली में आयोजित अमर शहीद करतार सिंह सराबा की बलिदान शताब्दी पर पत्रकार श्री चन्द्रमोहन आर्य की सचित्र पुस्तिका 'क्रांति-गाथा' के विमोचन समारोह में व्यक्त किये।

साहित्यकार रविचन्द्र गुप्ता, पूर्व डी.सी.पी. चौ. चन्द्रभान, समाज सेवी श्री के.के. अग्रवाल, दक्षिण दिल्ली शिक्षा समिति चेयरमैन श्री यशपाल आर्य, प्रधान श्री राम निवास गुप्ता ने 'शहादत का मोल' कलैण्डर 2016 का भी विमोचन किया। युवा प्रवक्ता श्री प्रदीप सेतिया ने शहीद करतार सिंह सराबा के जीवन पर अपने-अपने विचार व्यक्त किये। वरिष्ठ पत्रकार श्री जय सिंह कटारिया ने फ्रांस में हुए नरसंहार की निन्दा करते हुए कहा 'देश के सर्वांगीण विकास हेतु भारतीयों को एकजुट होकर विश्व में फैले आतंकवाद से निपटने के लिए सरकार से आग्रह करना होगा।' इस अवसर पर श्री देवीदत्त सजल, श्री प्रेम कुमार शुक्ल ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

-चन्द्रमोहन आर्य, प्रेस सचिव

स्वामी श्रद्धानन्द के 89वें बलिदान दिवस पर

आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा विशाल शोभायात्रा का आयोजन 25 दिसम्बर 2015 को

स्वामी श्रद्धानन्द के 89वें बलिदान दिवस पर आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 द्वारा 25 दिसम्बर 2015 को विशाल शोभायात्रा निकाली जाएगी।

इसी दौरान यज्ञ का आयोजन प्रात: 8.00 से 9.30 तक होगा। उसके पश्चात् शोभायात्रा प्रात: 10.00 बजे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली से शुरू होकर रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2 में पहुंचेगी। जहां दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक विशाल सार्वजनिक सभा का आयोजन होगा। कार्यक्रम के सम्मान समारोह में श्री वेदप्रकाश कथूरिया स्मृति पुरस्कार, महात्मा प्रभु आश्रित स्मृति पुरस्कार एवं पं. ब्रह्म शर्मा आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार प्रदान किये जाएंगे।

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर भारी संख्या में एकत्रित होकर संगठन का परिचय देने का आग्रह करती है।

पृष्ठ 1 का शेष

आखिर क्यों खाली ...

पक्ष प्रस्तुत करने के लिए गोपाल स्वामी आयंगर और शेख अब्दुल्ला को भेजा गया। आयंगर इस कार्य के लिए अयोग्य सिद्ध हुए। उन्हें अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और कश्मीर समस्या का कोई ज्ञान नहीं था, और शेख अब्दुल्ला के लिए कश्मीर से पहले उसका मजहब था, जबकि इस काम के लिए न्यायमूर्ति मेहरचंद महाजन सबसे उपयुक्त व्यक्ति थे लेकिन पटेल का करीबी होने के कारण इस प्रखर राष्ट्रवादी का टिकट काट दिया गया और कश्मीर समस्या के साथ-साथ लाखों हिन्दुओं का भविष्य भी संयुक्त राष्ट्रसंघ के साथ पाकिस्तानी मुस्लिमों की तलवार की धार में अटक गया प्रस्तुत आंकडें बलराज मधोक की पुस्तक ''कश्मीर जीत में हार'' के आधार पर।

-राजीव चौधरी

पृष्ठ 3 का शेष

मनुर्भव...

यह है कि प्रथम तीन संस्कार तो शिशु के जन्म से पूर्व के ही हैं-बस यहीं से 'संस्कारित सन्तति' के निर्माण का मंगलमय आरम्भ होता है। स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों में ''शरीर और आत्मा ससंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होती हैं, इसलिए संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है।'' अस्तु! हे गृहस्थ-कुल में जन्मे विद्वान्! तू सन्तति-क्रम का विस्तार करता हुआ ज्ञान के प्रकाशक प्रभु का अनुगमन कर और बुद्धि से तू उनके बनाए गये मार्गो को प्रकाश से युक्त रख। उपदेष्टा जनों के कभी नष्ट न होने वाले सत्कर्म को कर। तू सदैव मननशील हो और दिव्य गुण वाला पुत्र व शिष्य तैयार कर।

अन्त में इतना ही कहना चाहूंगा कि घर की केन्द्र होती है मां। उसके कोमल, सुघड़ हाथों के संस्पर्थ से घर की हर वस्तु संगीतमय हो सकती है जब वह स्वयं संगीतमय हो, उसका जीवन लयबद्ध हो, सजग हो।

-डॉ. धर्मवीर सेठी, गुरुग्राम, (हरियाणा)

आर्य समाज मन्दिर डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी में चोरी की निन्दा

आर्य समाज मन्दिर डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी नई दिल्ली जन-जागृति व सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा हेतु पिछले 53 वर्षों से कार्यरत है परन्तु इस पवित्र धाम में गत् 15 नवम्बर की रात्रि कुछ असामाजिक तत्वों ने ताला तोड़कर जरूरी कागजात, रसीद बुक, कैशयुक्त दानपात्र, स्टील की अल्मारी, खिड़की, दरवाजा, यज्ञ पात्र, हवन कुण्ड, कुल्हाड़ी इत्यादि सामान ले गये। इस घृणित कार्य की भर्त्सना करते हुए आर्य समाज मन्दिर के अतिरिक्त सचिव, पत्रकार श्री जयसिंह कटारिया एवं महिला सचिव श्रीमती ममता शर्मा ने उच्चाधिकारियों के अलावा स्थानीय सांसद डॉ. हर्षवर्द्धन को भी शीघ्र कार्यवाही करने की मांग की है।

-रमेश भाटिया, प्रेस सचिव

आर्य समाज करोल बाग का 87वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज करोलबाग का 87वां वार्षिकोत्व दिनांक 22 नवम्बर 2015 को चतुर्वेदीय शतकम् यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त महिला सम्मेलन, भजन संध्या, सिविल सर्विसेज़ एवं अन्य प्रोफेशनल सर्विसिंग के छात्रों के लिए मोटीवेशनल लेक्चर 'हम कैसे सफल हों' जिसमें लगभग 100 छात्र-छात्राओं ने अपनी भागीदारी निभाई। उत्तरी नगर निगम दिल्ली के महापौर श्री रविन्द्र गुप्ता द्वारा नवनिर्मित आर्य फिजियो थैरेपी केन्द्र का उद्घाटन किया। प्रधान श्री कीर्ति शर्मा द्वारा आर्य समाज करोलबाग के इतिहास को बताया गया एवं इस संदर्भ में एक लघु पुस्तिका भेंट की गयी। समस्त कार्यक्रम डॉ. प्रदीप सुनेजा जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ, 'वैदिक संस्कृति के मूल तत्व, सहिस्णुता एवं विविधता' विषय पर आचार्य वाचस्पति मिश्रा, आचार्य सुश्रुत एवं कीर्ति शर्मा द्वारा विचार रखे गये। समारोह में श्री राजेश भाटिया (पार्षद एवं सदस्य स्थायी समिति) श्रीमती पूर्णिमा विद्यार्थी(पार्षद) सुप्रसिद्ध डॉ. गंगा राम अस्पताल के डॉ. सुधीर कल्हन, श्री धर्मपाल आहूजा, प्रधान सतभावो स्कूल, श्री राजीव आर्य महामंत्री केंन्द्रीय सभा, श्री वागीश ईसार प्रधान डोरीवालान आर्य समाज, श्री अमरनाथ गोगिया प्रधान मॉडल बस्ती आर्य समाज, श्री रामलाल महामंत्री करोलबाग व्यापार फेडरेशन श्री विनय टण्डन मंत्री तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। **-कीर्ति शर्मा, प्रधान**

जब हम आये जगत में, जगत हंसा हम रोए ऐसी करनी कर चलें, आप हंसें, जग रोए

प्रत्येक व्यक्ति ऐसा नहीं होता कि उसकी करनी के बाद जग रोता है। मर जाने पर अनगिनत में से चन्द ही ऐसे होते हैं जिनके न रहने पर उनकी स्मृति में कवि कविता लिखते हैं कि रोना आ ही जाता है सुनते-सुनते, रोना न भी आवे तो वीर रस की कविता सुनकर कुछ न कुछ कर गुजरने को मन करता है। अब हम मुख्य विषय पर आते हैं। करूण रस और वीर रस पर ये दोनों जगत गुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती पर समान रूप से घटते है। जब कोई महापुरुष दुनिया से चला जाता है तो कवि कविता लिखता है, शिल्पकार स्मारक, चित्रकार-चित्र, मूर्तिकार स्मरणीय मूर्ति बनाता हैं भाव-विभोर कर देने वाली ये सभी स्मृतियां जनता के मन मस्तिष्क पर हमेशा के लिए रह जाती हैं, जिसे देखकर सुन समझ कर उनके अनुयायी अपने जीवन को भी तदानुसार बनाने का प्रयत्न कार्यरूप में कम ज्यादा अंशों में करते हैं। जिनका इतिहास उस महापुरुष के अनुयायियों के साथ बनता जाता हैं। ऐसे ही महापुरुष की स्मृति में मुक्तिधाम जामनगर का निर्माण हुआ जो संसार का सर्वोत्तम स्मारक था, परन्तु, किन्तु लेकिन समय के घूमने वाले चक्र के साथ वह अब नहीं रहा। दो-तीन पीढ़ी के देखते-देखते सब कुछ बदल गया। अब तो 'खण्डहर बता रहे हैं, इमारत बुलन्दथी।' देखकर सिवा दु:ख के अन्य अनुभूति नहीं होती। काश ये अपने मूल रूप में यथास्थिति में रह पाता? संसार कल्पनाशीलों से खाली नहीं है।

गुजरात की ही सिद्ध भूमि सिद्धपुर में ऐसा प्रयत्न आरम्भ हुआ जिसने देखते ही देखते मूर्त रूप लिया जो आज विश्व का सर्वोतम मुक्तिधाम है। जिसे देख दर्शकों को नवप्रेरणा प्राप्त होती है, सभी ने अपने-अपने महापुरुषों की स्मृति में यहां स्मृति चिह्न बनवाये। अपने-अपने सामर्थ्य आर्थिक स्थिति अनुसार पूरे मुक्तिधाम में कहीं भी शंकर नहीं मूल शंकर (त्रिवेदी) से शुद्ध चैतन्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का कोई स्मृति चिह्न मुक्तिधाम में नहीं है। जबकि विश्वव्यापी आर्यसमाज, परोपकारिणी सभा अजमेर, महर्षि दयानन्द सरस्वती ट्रस्ट टंकारा, सत्यार्थ प्रकाश न्यास-उदयपुर, मोहन आश्रम-हरिद्वार और भी अन्य स्थान हैं उन्हें ऐसा प्रयत्न करना ही चाहिए कि ऋषि से संबंधित इस सिद्धपुर में ऐसा स्मृति चिह्न हो। सहस्त्र ओदिच्य महासभा भी यह कार्य करे तो सरस्वती नदी के किनारे बसे सारस्वत ब्राह्मणों में से सिद्धपुर आये यहां भी सरस्वती नदी किनारे ही तो मुक्तिधाम है, तो संसार का सवोत्तम कार्य करके ऐतिहासिक कार्य हो जाये।

गुजरात तो गुजरात है। जहां से वर्तमान में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी हैं जो क्रांतिकारियों के निर्माता-महर्षि दयानन्द के परम शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा की राख, जन्म स्थान में विश्वदर्शनीय स्मारक बना सकते हैं, तो राष्ट्र के पितामह महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्मारक भी सिद्धपुर में क्यों नहीं बना सकते?

टंकारा मुक्तिधाम को भी महर्षि दयानन्द मुक्तिधाम का भव्य रूप देकर ऐसा ही उदयपुर, हरिद्वार, अजमेर में भी हो सकता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो कहा था वह किया गया। जीते जी प्रेरणा ली तो क्या बाद में नहीं ली जा सकती? ऐसे कई स्मारक संसार में है जिनसे जनता प्रेरणा ले रही लेती रहेगी। मूर्तिपूजा विरोधी, प्रत्यक्ष में होने पर भी मन के भाव स्वयं ही समूह में पैदा हों तो अच्छा रहता है।

...शेष पेज 7 पर

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

The Ruler

The people of the land address their ruler, "You are the guardian of people; the destroyer of evil forces. You are the sustainer of the land. Let no evil spirit torment our mind. May you drive away poverty and hunger far beyond a pasture-measure. May you be strong enough to give us all protection. May both of your hands hold the weapons of justice and shower happiness on us."

The ruler should be 'Agni', the leader in front. He should be 'Vasu' the provider of shelter to each and every individual on the land. His foremost duty is to protect the land from foreign invasion and alien culture. He should guard every person from all kinds of disease, poverty and injustice.

'Like mothers crying for their children, like milch cows saving their milk for their calves and like roaring streams rushing towards the main river, you march, O ruler, to bestow peace and happiness on your men,' says s succeeding verse. The ruler lives amidst his people to share their happiness and misery. He reflects their aspiration and stands as an all time ideal for them. The true ruler is secular, liberal and txtremely generous.

मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम्।

परोगव्यूत्यनिरामप क्षुधमग्ने सेध रक्षस्विनः।। (Rv.viii.60.20)

Ma no raksa a vesid aghrnivaso ma yatur yatumavatam l

parogavyuty aniram apa ksdham agne sedha raksasvinah ll

Evils of Polygamy

"My ribs are torturing me from all sides like rival co-Wives, or like the roats gnawing at the weaver's thread. My I know the reason of this. O earth and heaven ? "- Likewise laments a worldly man deeply indulged in sensual pleasure. He narrates his agony for marrying more than one wife. His worries and sorrows know no bounds. He repents for his weak moments in life when he fell a prey to sexual Impulses. The verse speaks of the misfortune of a husband indulging in such vulgar luxury like polygamy.

Co-wives envy each other competing to earn the favour of their husband. There is not a single day when they do not quarrel with each other. The poor husband thus leads a very miserable life listening to the complaints and counter complaints of his wives. Some of them drag him to the road. He, eventually, becomes a laughing stock in the society. The brunt of the violent action and dispute of the wives becomes unbearable for him. The wretched man repents, but by then he has ruined his life. His house becomes a hell for him. To discharge the various duties along with a virtuous wife may be difficult for a man sometimes. But to satiate the desires of a number of wives is the worst sort of tragedy.

सं मा तपन्तयभितः सपत्नीरिव पर्शवः!

मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतकृतो वित्तं में अस्य रोदसी।। (Rv.I 105.8)

Sam ma tapanty abhitah sapatnir iva parsavah! muso na sisna vyadanty madhyah stotaram te satakrato vittam me asyo radasi!!

Swearing in Ceremony of the Ruler

" I have consecrated you"; come amongst us, be steady and unvacillating; may all your subjects wish you well. may you always continue to be guardian of the land, O dutiful ruler! remain firm as a mountain, stand and shine like the bright sun. May the Supreme Lord, delighted by your service to people, dearly establish you. May he bless you with divine words as are bestowed by the royal priest in the coronation ceremony".

"Let all wish for you always". These words in the verse are significant. "You remain in the seat so long as the people with or otherwise cacate it. Let the land be safe and secure under your administration".

The Vedic doctrine of administration of a state is in concordance of the law of justice of the divine Lord. Many verses in the Vedas address God as father and ruler. For the ruler of the Land, the Merciful and just Lord should be the divine Guide. "Just as the resplendent sun, the divine creation of the Lord, spreads His authority by spereading light and life, so you become, O ruler, Be glorious, Renowed and eminent", says another verse.

आ त्वाहार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः।

विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट मधि भ्रशत्।।

इहैवैधि माप च्योष्ठः पर्वतइवाविचाचलिः। इन्द्रइवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट मु धारय।। (Rv. X. 173.1.-2)

A tvaharsam antar edhi dhruvas tisthavicacalih! visas tva sarva vanchantu ma tvad rastram adhi bhrasat!! Ihaivaidhi mapa cyosthah parvata ivavicacalih

indra eveha dhruras tistheha rastram u dharaya

To Be Continued ...

बोध कथा

ईर्ष्या और वैर की अग्नि बुझाओ!

बहुत समय पहले की बात है मथुरा में राजा बाबू नाम के एक सेठ रहते थे। धर्म की ओर उनकी बहुत रुचि थी। कितने ही मन्दिर उन्होंने बनवाये। एक पाठशाला बनवाई, जिसमें विद्वान् संन्यासी पढ़ते थे।

राजा बाबू का एक और सेठ लक्ष्मीचन्द से झगड़ा था, जो जमीन के सम्बन्ध में था। झगड़ा बढ़ते-बढ़ते न्यायालय में पहुंचा। अभियोग चलने लगा। कई वर्ष अभियोग चलता रहा। राजा बाबू अभियोगों को भी लड़ते थे और अपने घर का काम भी करते थे। उनकी बनवाई हुई पाठशाला में प्रत्येक रात्रि को कथा होती थी। राजा बाबू सर्वदा उसे सुनने जाते। कथा सुनते-सुनते उनको संसार से वैराग्य उत्पन्न हो गया। अपने गुरु से पूछकर वे पाठशाला में रहने लगे। एक कमरे में पड़े रहते। खाना घर से आ जाता, वे खा लेते और जाप करते रहते। बहुत समय बीत गया। एक दिन उन्होंने अपने गुरु से कहा- ''यदि आपकी कृपा हो तो संन्यास ले लूं?''

गुरु ने कहा- ''नहीं राजा बाबू! अभी तुम संन्यास के योग्य नहीं हुए।''

राजा बाबू ने सोचा- 'घर पर नहीं जाता, परन्तु मेरी रोटी तो घर से आती है। अब घर से रोटी नहीं मंगाऊंगा। यहीं एक नौकर रख लूंगा। वही बना दिया करेगा।' ऐसा ही किया उन्होंने और फिर एक दिन यह सोचकर कि अब तो घर से कोई सम्बन्ध नहीं, वे फिर बोले- ''गुरु महाराज! अब यदि संन्यास ले लूं तो?''

गुरु ने कहा-''नहीं, अभी समय नहीं आया।''

राजा बाबू ने सोचा- 'मै अभी नौकर से रोटी बनवाता हूं। इसीलिए गुरुजी नहीं मानते। यह भी छोड़ दूंगा। भिक्षा मांगकर खाऊंगा और आराम की सब वस्तुएं भी छोड़ दूंगा।' तब ऐसा ही किया उसने। सुबह के समय नगर में जाता, भिक्षा मांग करके लाता और सारा दिन आत्म-चिन्तन में मस्त होकर बैठा रहता।

पर्याप्त समय बीत गया। फिर प्रार्थना की गुरु से- ''गुरुजी, मुझे संन्यास दे दीजिए।''

गुरु ने सोचकर कहा-''अभी नहीं राजा बाबू।''

राज बाबू आश्चर्यचकित कि अब क्या त्रुटि रह गई? सोचकर देखा और फिर अपने-आपको कहा- 'मैं सभी जगह मांगने गया हूं परन्तु सेठ लक्ष्मीचन्द के यहां मांगने नहीं गया। इसलिए शत्रुता की पुरानी भावना अब भी मेरे हृदय में बसी हुई है। इस भावना को छोड़ देना होगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही सेठ लक्ष्मीचन्द के मकान पर पहुंच गया। जाकर अलख जगाई-''भगवान् के नाम पर भिक्षा दो।'' सेठ लक्ष्मीचन्द के नौकरों ने राजा बाबू को देखा तो दौड़े-दौड़े सेठ के पास गए। हांपते हुए बोले-''सेठजी! राजा बाबू आपके यहां भीख मांगने आया है!''

लक्ष्मीचन्द आश्चर्य से बोला-''यह कैसे हो सकता है? तुम्हें भ्रम हुआ है। कोई और होगा वह।''

नौकरों ने कहा-''नहीं सेठजी! यह राजा बाबू ही हैं। यदि आप कहें तो खाने में विष मिलाकर दे दें। सर्वदा के लिए झगड़ा समाप्त हो जायेगा।''

लक्ष्मीचन्द उच्च स्वर में बोले-''नहीं, मुझे देखने दो।'' मकान के द्वार पर आकर उन्होंने देखा कि राजा बाबू झोली पसारे खड़े हैं।

राजा बाबू ने उन्हें देखा और झोली फैलाकर बोले- ''सेठ जी, भिक्षा!''

लक्ष्मीचन्द दौड़कर आगे बढ़े, चिल्लाकर बोले- ''राजा!'' राजा बाबू को अपनी छाती से लगा लिया उन्होंने। राजा बाबू ने झुककर उनके चरणों को स्पर्श किया। लक्ष्मीचन्द भी उनके पैरों में जा गिरे।

बोले-''राजा बाबू! ऊपर चलो मेरे साथ बैठकर खाना खाओ।''

राजा बाबू बोले-''नहीं सेठजी! मैं तो भिखारी बनकर आया हूं। भीख मांगने आया हूं। भीख डाल दो मेरी झोली में।''

उसी समय एक नौकर भागता हुआ आया, बोला-''सेठ जी! आपका तार। देखिये, इस तार में क्या लिखा है?''

लक्ष्मीचन्द ने खोलकर पढ़ा। तार राजा बाबू के बेटों का था। कलकत्ता से आया था- ''हमारे पिता राजा बाबू का कहीं पता नहीं लगा। भूमि का झगड़ा अभी समाप्त नहीं हुआ, किन्तु इस जमीन को लेकर हम क्या करेंगे? इस तार द्वारा हम भूमि से अपना अधिकार वापस लेते हैं। हमारे पिताजी नहीं हैं। आप कृपा करके हमारे पिता बनिए। हमें अपनी रक्षा में लीजिए।''

लक्ष्मीचन्द रोते हुए बोले-''नहीं, ऐसा नहीं होगा। उन्हें लिखो कि भूमि उनकी है। मुझे नहीं चाहिए। मैं पिता बनकर उनकी रक्षा करूंगा। आज से वे केवल राजा बाबू के नहीं, मेरे भी बेटे हुए।''

पश्चात् राजा बाबू भिक्षा लेकर मुड़े तो देखा, सामने गुरुजी खड़े हैं-हाथ में गेरुवे वस्त्र लिये हुए। राजा बाबू को छाती से लगाकर बोले-''अब तू संन्यासी बनने के योग्य हुआ राजा बाबू! अब ये कपड़े पहन!''

इस प्रकार जब तक मन के अन्दर घृणा है, तब तक गायत्री के जाप का क्या लाभ? गायत्री की उपासना यदि करनी है, तो मन से घृणा को निकाल दो। ईर्ष्या और वैर की भावना को दूर निकाल दो तो फिर देखो, आनन्द और सुख मिलता है या नहीं? **साभार: बोध कथाएं**

नोटः यह पुस्तक सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। प्राप्त करने के लिए मो. 09540040339 पर संपर्क करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन : अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं। इसी श्रृंखला में आगामी 4 माह में दिसम्बर 2015 से मार्च 2016 के मध्य 12वें, 13वें, 14वें, एवं 15वें परिचय सम्मेलनों की तिथियों निश्चित कर दी गई हैं, जो इस प्रकार हैं -

13वां परिचय सम्मेलन (गुजरात)
दिनांक 3 जनवरी, 2016
वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ (गुज.)
अन्तिम तिथि 20 दिसम्बर, 2015

14वां परिचय सम्मेलन (म. प्रदेश)
दिनांक 14 फरवरी, 2016
आर्यसमाज रेलवे कालोनी, इन्द्रा नगर, रतलाम (म.प्र.)
अन्तिम तिथि 30 जनवरी,2016

15वां परिचय सम्मेलन (ज.-कश्मीर)
दिनांक 27 मार्च, 2016
आर्यसमाज बक्शी नगर, जम्मू
अन्तिम तिथि 10 मार्च, 2016

आपसे निवेदन है कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर प्रोत्साहित करें। **फार्म www.thearyasamaj.org/aryasandesh** से डाउन लोड किए जा सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए राष्ट्रीय अथवा प्रान्तीय संयोजक से सम्पर्क करें।

: निवेदक :

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**	**अर्जुन देव चड्ढ़ा**	**एस.पी.सिंह**
मंत्री (09826655117)	महामंत्री (9958174441)	राष्ट्रीय संयोजक(09414187428)	संयोजक दिल्ली (09540040324)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**	**आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन**	

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्त्वावधान में आर्य युवा सम्मेलन

6 दिसम्बर, 2015 प्रातः 9 बजे स्थान : आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, जी. टी. रोड पानीपत

आप सब इष्टमित्रों सहित सपरिवार पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

निवेदक : आचार्य विजयपाल (प्रधान) **मा. रामपाल आर्य** (मन्त्री) **आचार्य योगेन्द्र आर्य** (संयोजक) **आचार्य सर्वमित्र आर्य** (सह संयोजक)

पृष्ठ 5 का शेष

जब हम आये ...

स्मारक प्रेरणा स्थल है, घण्टे, घड़ियाल बजाने के स्थान नहीं। मन्नत मांगने के भी, पाखण्ड फैलाने के भी नहीं, ज्ञान विज्ञान के विरोधी भी नहीं है ये स्मारक। स्वामी नारायण के गांधी नगर, गुजरात और दिल्ली के मंदिर ऐसे ही है, हरिद्वार में, माउन्ट आबू में, भारत माता मंदिर में घण्टे-घड़ियाल नहीं बजाते, न आरती उतारी जाती है किन्हीं भी स्मारकों में कहीं भी। तो फिर महर्षि दयानन्द सरस्वती के लिए स्मारक से इतना डर क्यों? कि यहां ये होगा वह होगा। कहीं भी नहीं हो रहा। आर्य समाज वालों के स्मारकों पर भी। अब तो पौराणिकों ने भी महर्षि दयानन्द की स्मृति में कि- 'उत्तम स्वभाव हमारा दुश्मन का मन रिझावे, वह देखते ही कह दे, तुम प्यार के लिये हो।' ऐसी चीजें स्थान-स्थान पर बना रखी हैं। जिससे प्रेरणा लेती है इस देश की जनता। स्वामी दयानन्द ने स्वयं की मूर्तिपूजा का विरोध किया था, स्मारक का नहीं।

प्रेरक प्रसंग

प्रभात से रात हो गई

मैंने अपने द्वारा लिखित 'रक्तसाक्षी पण्डित लेखराम' पुस्तक में पण्डितजी की एक घटना दी है जो मुझे अत्यन्त प्रेरणाप्रद लगती है। वीरवर लेखराम के बलिदान से एक वर्ष पूर्व की बात है। पण्डित जी करनाल पधारे। वहां से दिल्ली गये। उनके साथ एक आर्य सज्जन भी गये। मेरा अनुमान है कि साथ जाने वाले महाशय का नाम श्रीमान् ला. बनवारी लालजी आर्य था। वे पण्डितजी के बड़े भक्त थे।

पण्डितजी दिल्ली में एक दुकान से दूसरी और दूसरी से तीसरी पर जाते। एक बाजार से दूसरे में जाते। एक पुस्तक की खोज में प्रातः काल से वे लगे हुए थे। उन दिनों रिक्शा, स्कूटर, टैक्सियां तो थी नहीं। वह युग पैदल चलने वालों का युग था। पण्डित लेखराम सारा दिन पैदल ही इस कार्य में घूमते रहे। कहां खाना और कहां पीना सब-कुछ भूल गये।

साथी ने कहा, ''पण्डित जी ऐसी कौन-सी आवश्यक पुस्तक है, जिसके लिए आप इतने परेशान हो रहे हैं? प्रभात से रात होने को है।'' पंण्डित जी ने कहा, ''मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी ने आर्यजाति पर एक बार किया है। उसके उत्तर में मैंने एक पुस्तक लिखी है। उसमें इस पुस्तक का प्रमाण देना है। यह पुस्तक मुसलमानी मत की एक प्रामणिक पुस्तक है। प्रमाण तो मुझे कण्ठस्थ है फिर भी इसका मेरे पास होना आवश्यक है। इसमें इस्लाम के मसला 'लफ हरीरी' का विस्तार से वर्णन है। यह मसला शिया मुसलमानों के 'मुता' के भी कुछ आगे है।

अन्त में पण्डितजी को एक बड़ी दूकान से वह पुस्तक मिल गई। कुछ और पुस्तकें भी पसन्द आई। वे भी ले-लीं। इन सब पुस्तकों का मूल्य पन्द्रह रुपये बनता था। पण्डितजी जब यह राशि देने लगे तो दुकानदार को यह विचार आया कि ऐसी पुस्तकें कोई साधारण व्यक्ति तो क्रय नहीं करता। यह ग्राहक कोई नामी स्कालर ही हो सकता है।

दुकानदार संयोग से एक आर्य पुरुष था। उसने पैसों की ओर हाथ बढ़ाने की बजाए ग्राहक से यह प्रश्न कर दिया कि आपका शुभ नाम क्या है? आप कौन है?

इससे पूर्व कि रक्तसाक्षी वीरवर लेखराम बोलते, उन को साथी ने एकदम कहा, ''आप हैं धर्मरक्षक, जातिरक्षक आर्यपथिक पण्डित लेखरामजी।''

यह सुनते ही दुकानदार ने पण्डितजी को नमस्ते की। उसने प्रथम बार ही वीरजी के दर्शन किये थे। पैसे लेने से इन्कार कर दिया।

इस घटना के दो पहलू हैं। पण्डित जी की लग्न देखिए कि धर्म रक्षा के लिए पैदल चलते-चलते प्रभात से रात कर दी और उस चरणानुरागी महाशय बनवारी लालजी की धुन का भी मूल्यांकन कीजिए जो अपने धर्माचार्य के साथ दीवाना बनकर घूम रहा है। इस घटना का एक दूसरा पहलू भी है। पण्डितजी को 25-30 रुपया मासिक दक्षिणा मिलती थी। अपनी मासिक आय का आधा या आधे से भी अधिक धर्मरक्षा में लगा देना कितना बड़ा त्याग है। कहना सरल है, परंतु करना अति कठिन है।

पाठकवृन्द उस दुकानदार के धर्मानुराग को भी हम भूल नहीं सकते जिसने पण्डितजी से अपनी प्रथम भेंट में ही यह कह दिया कि मैं पन्द्रह रुपये नहीं लूंगा। आप कौन-सा किसी निजी धन्धे में लगे हैं। यह आर्यधर्म की रक्षा का प्रश्न है, यह हिन्दूजाति की रक्षा का प्रश्न है। क्या आप जानते हैं कि वह दुकानदार कौन था? उसका नाम था श्री बाबू दुर्गाप्रसाद जी। आर्यो! आईए! अपने अतीत को वर्तमान करके दिखा दें।

-तड़पवाले,
तड़पाती जिनक कहानी

पुरोहित एवं उपदेशक प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 नई दिल्ली दिनांक 16 से 18 जनवरी 2016 को देश-विदेश में धर्म प्रचार हेतु पुरोहित एवं व्याख्यान के विशिष्ट प्रशिक्षण के निमित्त शास्त्री या उसके समकक्ष योग्यता वाले युवाओं के लिए त्रिदिवसीय शिविर आयोजित कर रहा है। शास्त्री या उसके समकक्ष डिग्री आपेक्षित नहीं है। यदि आप स्वयं को इसके उपयुक्त समझते हैं और इस क्षेत्र में रुचि रखते हैं तो सम्पर्क करें। अभी प्रारम्भिक स्तर पर त्रिदिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

प्रशिक्षण विषय : 1. वैदिक दर्शन एवं सिद्धान्त 2. कर्म काण्डों की प्रक्रिया और उनका वैज्ञानिक महत्व 3. व्याख्यान कला एवं 4. लोक व्यवहार

प्रसिद्ध वक्ता डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. विनय विद्यालंकार एवं आचार्य वीरेन्द्र विक्रम प्रशिक्षिओं को प्रशिक्षित करेंगे।

प्रशिक्षण हेतु पंजीकरण दिनांक 15 जनवरी 2016 को प्रशिक्षण स्थल पर होगा। कार्यक्रम में सम्मिलित होने के लिए अपना नाम, पता, फोन नं., ई-मेल आदि नोट कराने के लिए श्री सुरेन्द्र प्रताप दूरभाष-011 46678389, 09953782813 या श्री राजीव चौधरी मो. 09810014097 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

23 नवम्बर से 29 नवम्बर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 26 नवम्बर/ 27 नवम्बर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 25 नवम्बर, 2015

स्वास्थ्य चर्चा

जमा कफ निकल जाए

1. 3 ग्राम लोंग 100 ग्राम पानी में उबालें एक चौथाई रह जाने पर कम गर्म पीएं।
2. लोंग के तेल की तीन-चार बूंद बूरा या बताशे में डालकर प्रात: सायं लें।

कुत्ता काटने पर

1. लहसन, अदरक, प्याज को कूट कर कुत्ते काटे के स्थान पर लगाकर फिर इन्हीं चीजों को 10-10 ग्राम को 150 ग्राम पानी में उबालें। एक चौथाई रह जाने पर छान कर पिलाएं। 7 दिन लगातार सेवन करें।
2. हल्दी पिसी 10 ग्राम पानी से प्रात: सांय दें और काटे हुए स्थान पर हल्दी पीसकर लेप कर दें। फिर पागल कुत्ते का असर खत्म हो जाएगा।

शरीर का काया-कल्प

1. त्रिफला पिसा 500 ग्राम में खांड 500 ग्राम मिलाकर 5-5 ग्राम प्रात-सांय पानी से लें।
2. ब्रह्म बूटी, बादाम गिरी 50-50 ग्राम काली मिर्च 5 ग्राम मुनक्का 25 ग्राम कूट कर एक चम्मच दवा दूध के साथ लगातार तीन माह प्रयोग करें।
3. रुद्रवन्ती 90 ग्राम त्रिफला 30 ग्राम सौंठ, पीपल, काली मिर्च 15 ग्राम कूट छान कर 5 ग्राम को प्रात: पानी से तीन माह लगातार प्रयोग करें।

साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद वैद्य खेम भाई द्वारा रचित ''चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद'' पुस्तक से साभार यह पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में भी उपलब्ध है। अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

प्रतिष्ठा में,

कैलेण्डर वर्ष 2016

बढ़िया 130 ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339

चुनाव समाचार

आर्यसमाज मंदिर खजूरी खास, दिल्ली-94

प्रधान -अंगदसिंह आर्य

मंत्री - आर्य लालता प्रसाद शर्मा

कोषाध्यक्ष - जुगेन्द्रसिंह आर्य

बिकाऊ है

सभा की एक मारुति वैन, 2004 मॉडल बिकाऊ है। खरीदने के लिए संपर्क करें-

एस.पी. सिंह, 09540040324

सूचना

श्री पंडित विश्वनाथ द्वारा आर्य समाज पिम्परी से पुरोहित कार्य छोड़ देने के बाद अब उनके स्थान पर श्री हेमंत कुमार आर्य को रखा गया है जो कि सभी सोलह संस्कार वैदिक पद्धति से कराते हैं। अत: बुकिंग के लिए 020-27410047 पर संपर्क करें। **-मंत्री**

दैनिक याज्ञिकों/आर्यसमाजों के लिए खुशखबरी

MDH हवन सामग्री

मात्र 90/- किलो (10, 20 किलो की पैकिंग)

अब 5 किलो, 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1,

दूरभाष - 23360150, 9540040339

आर्य संदेश इंटरनेट पर पढ़े :

www.thearyasamaj.org/article

फेसबुक पर हमसे जुड़ें :

margdrashan@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह